ISSN: 2456-9186, Vol. I, Issue. III, Dec-2017

वागर्थः

(An International Journal of Sanskrit Research)

Journal Homepage: http://cphfs.in/research.php

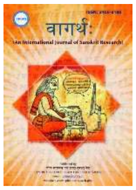

आदिकवि वाल्मीकि और जैनाचार्यों की दृष्टि में हनुमान

डॉ. विकास चौधरी

L-188, बप्पा रावल नगर

हिरण मगरी सेक्टर-6

उदयपुर-313002

ईमेल- drvikas36@gmail.com

शोध-सार - *संस्कृत एवं प्राकृत वाङ्मय की परंपरा विशाल एव समृद्ध है इसमें विभिन्न प्रकार के काव्यों की रचना की गई है। जिनमें मुक्तक, कथा, नाटक, महाकाव्य, चरितकाव्य आदि पर साहित्यकारों, आचार्यों और कवियों ने लेखन कार्य कर साहित्य की परंपरा को आगे बढ़ाया है। रामकथाओं के संदर्भ में भी संस्कृत ही नही वरन प्राकृत साहित्य भी अछूता नहीं रहा है साहित्यकारों और आचार्यों ने रामकथाओं पर भी उत्कृष्ट कोटि का लेखन कार्य किया है। जिससे रामकथा की परंपरा को संसार भर में प्रसिद्धि मिली है। रामकथा के पात्रों के जीवन चरित को और उनके प्रधान गुणों को आचार्यों ने अपने काव्यों में चरितार्थ किया है। जैनाचार्यों ने रामकथा के विभिन्न पात्रों को अपने काव्यों में इस प्रकार उद्यात किया है जिससे वे संसार भर में ख्याति को प्राप्त हुए हैं और संस्कृत के साथ साथ प्राकृत साहित्य और जैन परंपरा को भी अपने बुद्धिवाद से प्रतिष्ठित किया है।*

मूल-शब्द: हनुमान, वाल्मीकि रामायण, पाराशर संहिता, जैन साहित्य

I. प्रस्तावना

संस्कृत वाङ्मय में आदिकवि वाल्मीकि और उनकी रामायण को किसी परिचय की आवश्यकता नही है। जिस प्रकार संस्कृत वाङ्मय में सर्वप्रथम रामकथा के कर्त्ता के रूप में आदिकवि वाल्मीकि को जाना जाता है, उसी प्रकार प्राकृत साहित्य में आचार्य विमलसूरि को उनके पउमचरियं के लिए जाना जाता है। इसमें विमलसूरी ने पात्रों के चरित-चित्रण में परिस्थिति वश उद्यात भूमिका प्रस्तुत की है और स्त्री चरित्र को ऊँचा उठाया है। वाल्मीकि रामायण की कथा वस्तु में किंचित स्थान-स्थान पर परिवर्तन कर आचार्य विमलसूरी ने यथार्थ बुद्धिवाद की प्रतिष्ठा की है।

रामायण में रामकथा के सभी पात्र महत्वपूर्ण है, परन्तु एक पात्र ऐसा भी है जिसके अभाव में रामकथा की कल्पना किसी भी आचार्य अथवा साहित्यकार ने नहीं की है। उस पात्र ने अपनी भक्ति और वीरता के द्वारा रामकथाओं में विशिष्ट स्थान बना लिया है। रामकथा के प्रमुख पात्रों में हनुमान का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने अपनी वीरता और भक्ति के लिए संपूर्ण विश्व में प्रसिद्धि प्राप्त की है। हनुमान के संदर्भ में कहा जाता है कि सीता, लक्ष्मण व भरत के समान हनुमान राम के न जन्म के साथी है और न सगे-संबंधी ही है, फिर भी उन्होंने अपनी भक्ति के कारण अन्य प्रधान पात्रों से अधिक राम के हृदय में आदरणीय स्थान प्राप्त किया है और राम के समान ही जनमानस के हृदय में भी अपना स्थान बनाया। रामायण में प्रथम दर्शन में ही राम के मन को पूर्ण रुप से मुग्ध करने वाले एकमात्र हनुमान ही है। [1]

II. आदिकवि वाल्मीकि की दृष्टि में हनुमान

संस्कृत वाङ्मय में वानरों के जन्म के संदर्भ में कहा गया है कि यह सभी देवताओं के द्वारा उत्पन्न है [2]। इस प्रकार हनुमान का जन्म वायुदेव से हुआ था [3]। हनुमान के संदर्भ में वाल्मीकि रामायण में बताया गया है कि ये केसरी के ज्येष्ठ पुत्र थे। हनुमान जी ने गोकर्ण के ऋषियों तथा सूर्य से संपूर्ण व्याकरण तथा वेद-वेदांग का पूर्ण अध्ययन कर सम्पूर्ण विद्याओं को ग्रहण किया था।

जन्म: हनुमान के जन्म की कथा वाल्मीकि रामायण में किष्किंधाकांड में उनके समुद्रलंघन से पूर्व जाम्बवंत जी बताते हैं, हनुमान वानरराज केसरी के क्षेत्रज पुत्र है और वायुदेव के औरस पुत्र हैं, जो वानरराज कुंजर की पुत्री अंजना से उत्पन्न हैं।

स्कंदपुराण में हनुमान का उल्लेख करते हुए कहा गया है कि शिव के ग्यारहवें रुद्र ही विष्णु की सहायता हेतु कपि रूप में (हनुमान) अवतरित हुए। इसीलिए हनुमान को रुद्रावतार भी कहा गया है [4]। इसका उल्लेख वायुपुराण, शिवपुराण, भागवतपुराण, रामचरित मानस, अगस्त्य संहिता और विनय पत्रिका में किया गया है। हनुमान जी के जन्म और जन्म तिथियों को लेकर विद्वानों के मत एक नहीं हैं, इनकी जन्म तिथियों के सन्दर्भ में कुछ मत सर्वाधिक मान्य हैं वे इस प्रकार हैं -

A. कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी

'वायु पुराण' के अनुसार कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी को स्वाति नक्षत्र, मेष लग्न में स्वयं शङ्करजी माता अञ्जना के गर्भ से प्रकट हुए-

आश्विनस्यासिते पक्षे स्वात्यां भौमे चतुर्दशी ।
मेषलग्नेऽजनीगर्भात स्वयं जातो हर: शिव:।। [5]

'अगस्त्य संहिता' में हनुमान जी के अवतार, तिथि, घड़ी आदि का वर्णन करते हुए उन्हें शिवावतार कहा गया है-

ऊर्जे कृष्णे चतुर्दश्यां भौमे स्वात्यां कपीश्वरः।
मेषलग्नेऽञ्जनागर्भात् प्रादुर्भूतः स्वयं शिवः।।

कार्तिककृष्ण चतुर्दशी, मंगलवार, स्वातीनक्षत्र, मेष लग्न में माता अंजना के गर्भ से स्वयं भगवान् शंकर ने कपीश्वर हनुमान रूप में अवतार ग्रहण किया। [6]

जगद्गुरु रामानन्दाचार्य द्वारा रचित 'श्रीवैष्णवमताब्जभास्कर' ग्रन्थ के अनुसार हनुमान का जन्म कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी को हुआ था। इसलिए रामानन्द सम्प्रदाय के अनुयायी हनुमान जयंती कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी को मनाते हैं-

स्वात्यां कुजे शैवतिथौ तु कार्तिके ।
कृष्णेऽञ्जनागर्भत एव साक्षात् ।।
मेषे कपिट् प्रादुरभूच्छिवः स्वयं ।
व्रतादिना तत्र तदुत्सवं चरेत् ।।

चित्रकूट के प्रसिद्ध संत पद्मविभूषण जगद्गुरु रामानन्दाचार्य रामभद्राचार्यजी महाराज द्वारा रचित ग्रन्थ 'गीतरामायणम्' के अनुसार-

शम्भुश्चायं ननु पवनतोऽप्यञ्जनायां प्रजज्ञे।
प्रातः स्वात्यां कनकवपुषा मङ्गले मङ्गलाढ्यः।। [7]

भगवान शिव पवनदेव के संकल्प से माता अंजना के गर्भ में आकर प्रातःकाल स्वाति नक्षत्र में कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी, मंगल के दिन स्वर्ण के समान शरीर धारण करके हनुमान के रूप में प्रकट हुए।

B. चैत्र पूर्णिमा

'आनन्द रामायण' के अनुसार हनुमान चैत्र शुक्ल एकादशी को मघा नक्षत्र में प्रकट हुए, किन्तु कुछ विद्वान् कल्पभेद से चैत्र पूर्णिमा को हनुमान जी की जन्म तिथि मानते हैं-

चैत्रे मासि सिते पक्षे हरिदिन्यां महाभिधे।
नक्षत्रे स समुत्पन्नो हनुमान् रिपुसूदनः।।
महाचैत्रीपूर्णिमायां समुत्पन्नोऽञ्जनीसुतः।
वदन्ति कल्पभेदेन बुधा इत्यादि केचन।। [8]

अर्थात चैत्र शुक्ल एकादशी के दिन मघा नक्षत्र में भक्त शिरोमणि, भगवान राम के अनन्य स्नेही शत्रुओं का विनाश करने वाले हनुमान जी का जन्म हुआ। कुछ विद्वान कल्पभेद से चैत्र की पूर्णिमा के दिन हनुमान जी का शुभ जन्म होना बताते हैं। हनुमान के जन्म के सन्दर्भ में चैत्र पूर्णिमा तिथि का उल्लेख 'स्कन्द पुराण' में भी मिलता है, 'स्कन्द पुराण' के वर्णनानुसार हनुमान का जन्म चैत्र पूर्णिमा को हुआ था-

मेषसंक्रमणं भानौ सम्प्राप्ते मुनिसत्तमाः।
पूर्णिमाख्ये तिथौ पुण्ये चित्रानक्षत्रसंयुते।। [9]

इस प्रकार हनुमान के जन्मकाल के विषय में ग्रन्थों में आपसी मतभेद होने पर भी हनुमान जयंती भिन्न-भिन्न सम्प्रदाय अपनी-अपनी आस्था और विश्वास के साथ मानते हैं।

नाम : बाल्यावस्था में भूख लगने के कारण सूर्य को फल समझकर बालक हनुमान सूर्य की ओर बढ़े। सूर्य की ओर हनुमान को बढ़ता देख राहू ने इन्द्रदेव को पुकारा। इन्द्रदेव ने हनुमान पर वज्र द्वारा प्रहार किया जिससे उनकी बायी ठुड्डी (हनू) टूट गई [10]। इस घटना के पश्चात इंद्र द्वारा बालक का नाम हनुमान रखा गया [11] अर्थात पहले कोई अन्य नाम रहा होगा।

इनके नाम के सन्दर्भ में वाल्मीकि रामायण के युद्धकाण्ड में एक अन्य घटना के अनुसार बाल्यावस्था में सूर्य को दिव्यफल समझकर हनुमानजी तीन हजार योजन ऊँचे उछले परन्तु सूर्य तक न पहुचकर उदयगिरि पर्वत पर गिर पड़े और शिलाखण्ड पर गिरने के कारण

उनकी हनु कुछ कट कर सुदृढ़ हो गई इससे वे हनुमान नाम से प्रसिद्ध हुए। [12]

हनुमान जी को वानरराज केसरी के क्षेत्रज पुत्र के रूप में तथा वायुदेव के औरस पुत्र के रूप में जाना जाता है [13] । हनुमान जी वानरराज केसरी के ज्येष्ठ पुत्र के नाम से विख्यात थे।

ज्येष्ठः केसरिणः पुत्रो वातात्मज इति श्रुतः।
हनूमानिति विख्यातो लंघितो येन सागरः।। [14]

इसके अतिरिक्त पवनसुत, पवनपुत्र, पवनात्मज, मारुतात्मज, वायुतनय, केसरीनंदन, मारुतिनन्दन, अंजनापुत्र, आंजनेय, बजरंगबली आदि नामों कि व्याख्या संस्कृत साहित्य में विस्तार से मिलती हैं।

सर्वशास्त्रविशारद - अगस्तऋषि ने हनुमान के सन्दर्भ में राम से कहा है- संसार में ऐसा कौन है जो पराक्रम, बुद्धि प्रताप सुशीलता, मधुरता, नीति-अनीति के विवके, गंभीरता, चतुरता, उत्तम बल और धैर्य में हनुमान से बढ़कर हो। कपि श्रेष्ठ ने व्याकरण अध्ययन के लिए सूर्य की ओर मुख रखकर उनके आगे-आगे जाते थे। इन्होंने सूत्र, वृत्ति, वार्तिक, महाभाष्य और संग्रह इन सबका अच्छी तरह अध्ययन किया है। [15]

भाषाविद् – हनुमान जी अनेक भाषाविद् थे, लंका में अशोक वाटिका में सीता जी के निकट वृक्ष पर छुपे हुए वे विचार करते हैं-

यदि वाचं प्रदास्यामि द्विजातिरिव संस्कृतम् ।
रावणं मन्यमाना मां सीता भीता भविष्यति ।।
अवश्मेव वक्तव्यं मानुषं वाक्यमर्थवत् ।
मया सान्त्वयितुं शक्या नान्यथेयमनिन्दिता ।।

-(सुन्दरकाण्ड, सर्ग 30, श्लोक-18 एवं 19)

यदि मैं द्विज की भाँती संस्कृत वाणी का प्रयोग करूँगा तो सीताजी मुझे रावण समझकर भयभीत हो जाएंगी। ऐसी दशा में अवश्य ही मुझे उस सार्थक भाषा का प्रयोग करना चाहिए, जिसे अयोध्या के आस-पास की सामान्य जनता बोलती है। इस प्रकार वे सीताजी से अयोध्या के सामान्यजन की साधारण बोली में बोलते है।

III. पाराशर संहिता में हनुमान

विवाह - संस्कृत साहित्य में हनुमान जी को नैष्ठिक ब्रह्मचारी के रुप में जाना जाता है। परन्तु पाराशर संहिता के अनुसार हनुमानजी का विवाह हुआ था। उनकी पत्नी का नाम सुवर्चला बताया जाता है और वे सूर्य देव की पुत्री हैं। पराशर संहिता में कहा गया है कि ज्येष्ठ शुक्ल दशमी को भगवान सूर्य ने अपनी पुत्री सुवर्चला हनुमान को अर्पित की।

तस्य बुद्धिं च विद्यां च बलशौर्यपराक्रमान्
विचार्य तस्मै प्रददौ स्स स्वयकन्यां सुवर्चलाम्।। [16]

हनुमानजी के विषय में यह भी जानकारी मिलती है कि क्रमशः मतिमान, श्रुतिमान, केतुमान, गतिमान, धृतिमान ये हनुमान जी के भाई थे। इनके ये सभी भाई विवाहित थे। इन सभी के संतानें भी थीं, जिससे इनका वंश वर्षों तक चला। यह जानकारी “ब्रह्मांडपुराण” ग्रन्थ में उपलब्ध होती है ।

ज्येष्ठस्तु हनुमांस्तेषां मतिमांस्तु ततः स्मृत।
श्रुतिमान्केतुमांश्चैव मतिमान्धृतिमानपि।।

-(ब्रह्माण्ड पुराण 2.7.226)

संस्कृत वाङ्मय में हनुमानजी को नैष्ठिक ब्रह्मचारी माना गया है। हनुमान जी के विवाह के सन्दर्भ में दक्षिण भारत से प्राप्त एक मात्र पाराशर संहिता नामक ग्रन्थ ही है जो उनके विवाह की पुष्ठि करता है, अतः इसके प्रमाणित होने पर सन्देह होता है। यदि हनुमान जी के जीवन काल में ऐसी कोई घटना घटित हुई होती तो अवश्य ही अन्य ग्रन्थ भी इसका समर्थन करते। अतः इस प्रकार यह ग्रन्थ प्रमाणिक नही हो सकता। शोधपत्र में इसे केवल इसलिए जोड़ा गया है क्योंकि तेलंगाना के खम्मम जिले में एक मंदिर की प्राप्ति होती है, जहां उन्हें पत्नी सुवर्चला के साथ विराजमान दिखाया गया है। इस मंदिर में हनुमान जी की पूजा उनकी पत्नी के साथ होती है। ऐसी भी मान्यता है कि जिस व्यक्ति का विवाह नही हो रहा है वह उस मंदिर में जाकर हनुमान जी का उनकी पत्नी के साथ दर्शन करता है तो उसका विवाह शीघ्र हो जाता है और वैवाहिक जीवन में सदैव प्रेम बना रहता है।

IV. जैनाचार्यों की दृष्टि में हनुमान

जैन परंपरा की मान्यता के अनुसार प्रत्येक कल्प में 24 तीर्थंकर, 12 चक्रवर्ती, 9 प्रतिनारायण, 9 नारायण और 9 बलभद्र बताए गए हैं। इस प्रकार 63 शलाका पुरुष [17] होते हैं इनके अतिरिक्त तीर्थंकरों के 24-24 माता-पिता, 9 नारद, 11 रुद्र, 24 कामदेव ये विशिष्ट पुण्यशाली व्यक्ति भी प्रत्येक कल्प में होते हैं। यह सभी उत्तम पदधारी (महापुरुष) तद्भव मोक्षगामी या निकट भविष्य में मोक्षगामी भव्य जीव माने जाते हैं। इनमें राम की गणना आठवें बलभद्र के रूप में, लक्ष्मण की घटना आठवें नारायण के रूप में, रावण की घटना आठवें प्रतिनारायण के रूप में तथा हनुमान की घटना 20वें कामदेव के रूप में की जाती है। प्रत्येक तीर्थंकर के काल में एक कामदेव होता है जो अपने रूप, बल, विद्या आदि से लोकप्रिय होता है। हनुमान को 20वें तीर्थंकर मुनि सुव्रतनाथ के समय का कामदेव बताया गया है [18]। यह वानर नहीं अपितु वानरवंशी थे अर्थात जैन धर्मानुसार इनके वंश के राज्यध्वज में वानर का चिन्ह अंकित था इसलिए इनका कुल वानरवंश के नाम से विख्यात हुआ।

हनुमान के जन्म के पूर्व में ही उनके 6 भवों की घटना का उल्लेख जैन रामायणों में मिलता है। पउमचरियं में हनुमान के छः पूर्वभवों

का उल्लेख मिलता है जिनमें हनुमान राजपुत्र दमयंत, सिंहचंद्र तथा राजकुमार सिंहवाहन के रूप में मनुष्य लोक में तथा तीन भवों में देवलोक में जन्मे थे [19] । (पउमचरियं पर्व 15 से 19 में कथा वर्णित है।)

माता-पिता और शुभ-चिन्ह - हनुमान आदित्यपुर नगर के राजा प्रहलाद तथा रानी केतूमती के पुत्र वायुगति अपरनाम पवनंजय तथा अंजनासुंदरी के पुत्र थे [20] । अंजनासुंदरी ने चैत्रमास के कृष्णपक्ष की अष्टमी तिथि एवं श्रवणा नक्षत्र [21] में हनुमान को जन्म दिया।

त्रीषष्टिशलाकापुरुष, पद्मपुराण और पउमचरियं आदि ग्रंथों में हनुमान का जन्म चैत्रमास की कृष्णपक्ष की अष्टमी, रविवार के दिन रात्रि के अंतिम पहर में होना बताया गया है। ज्योतिष के अनुसार कुंडली सर्व प्रकार से शुभ थी एवं कुंडली में ब्रह्मयोग था [22] । नवजात शिशु के हाथ-पैर में हल, कमल, वज्र, मछली आदि के शुभ चिन्ह अंकित थे [23] ।

माहवमासहो वहुलट्ठमिए। रयणिहे पच्छिम-पहरद्धे थिए।।
णक्खत्त सवणे उप्पण्णु सुउ। हल-कमल-कुलिस-झस-कमल-जुउ।।
चक्कङ्कुस-कुम्भ-सङ्ख-सहिउ। सुह-लक्खणु अवलक्खण-रहिउ।। [24]

तब चैत्र कृष्ण अष्टमी की रात्रि के अंतिम पहर के श्रवण नक्षत्र में अंजना को पुत्र उत्पन्न हुआ जो हल, कमल, कुलिश, मीन और कमल के चिन्ह से युक्त था। चक्र, अंकुश, कुम्भ खम्भ से सहित शुभ लक्षणों वाला, वह अशुभ लक्षणों से रहित था।

नाम - अंजनासुंदरी अपने मामा प्रतिसूर्यक के साथ विमान में आरुढ होकर हनुरुह नगर जाती हैं, तभी अचानक बालक हाथ से छूटकर पहाड़ी की शिला पर जा गिरता है [25] । प्रतिसूर्यक नीचे उतरकर देखते हैं बालक के गिरने से पहाड़ चूर्ण-चूर्ण हो गया है। इस घटना के कारण बालक का नाम श्रीशैल रखते हैं-

बालत्तणम्मि जेणं, सेलो आचुण्णिओ य पडिएणं।

तेणं चिय सिरिसेलो, नामं पडिसुज्जएण कयं।। [26]

तथा हनुरुह नगर में अत्यंत सत्कार पाने के कारण गुरुजनों ने उनका दूसरा नाम हनुमान रखा-

हणुरुहनयरम्मि जहा, सक्कारो पाविओअइमहन्तो।

हणुओ त्ति तेण नामं, बीयं ठवियं गुरुयणेणं।। [27] ।

चूर्णितश्च ततः शैलस्तेनासौ पतनात्तदा।
श्रीशैल इति तेनासावस्माभिर्विस्मितैः स्तुतः।।

-पद्मपुराण, रविषेण-भाग-1, सर्ग 8/122

ततो हनूरुहाभिख्ये पुरे संवर्द्धितः शिशुः।
हनूमानिति तेनास्य द्वितीयं नाम निर्मितम्।।

-पद्मपुराण, रविषेण-भाग-1, सर्ग 18/124

स्वयंभूकृत पउमचरिउ में श्रीशैल के अतिरिक्त हनुवंत और सुंदर नाम भी मिलते हैं-

'सुन्दरु' जगे सुन्दरु भणेवि, 'सिरिसइलु' सिलायलु चुण्णु णिउ।

हणुरुह-दीवे पवड्ढियउ, 'हणुवन्त' णामु तें तासु किउ।। [28]

वह सुन्दर था, दुनिया उसे सुंदर कहती। श्रीशैल इसलिए कि शिलातल चूर्ण किया था। हनुवंत नाम इसलिए क्योंकि हनुरुह द्वीप में उसका लालन-पालन हुआ था।

इस प्रकार प्राकृत और जैन साहित्य में हनुमान के नाम के विषय में विभिन्न कथाऐं एवं तर्क आदि का उल्लेख मिलता है। हनुरुह द्वीप अथवा हनुरुह नगर में पालन-पोषण होने से हनुमान, शिला पर गिरने से उसे खंडित कर देने के कारण श्रीशैल, अत्यधिक सुन्दर व रूपवान होने से सुंदर [29] पवनंजय के औरस पुत्र होने से पवनसुत तथा अंजनापुत्र होने से आंजनेय [30] आदि नामों से हनुमान प्रसिद्ध हुए है।

विवाह - हनुमान जी के रावण के साथ पारिवारिक संबंध थे। वरुण युद्ध में हनुमान जी ने रावण की सहायता की थी जिससे प्रसन्न होकर रावण ने अपनी बहन चंद्रनखा की कन्या अनंगपुष्पा से हनुमान का विवाह कराया था [31] । किष्कूपुर के राजा नल ने भी रूप-संपदा के कारण लक्ष्मी को जीतने वाली अपनी हरिमालिनी नाम की प्रसिद्ध पुत्री बड़े वैभव के साथ हनुमान को दी [32] । किन्नरगीत नामक नगर से भी विद्याधरों की 100 कन्याएं हनुमान ने प्राप्त की। इस प्रकार उनकी 1,000 से अधिक पत्नियां हो गई [33] । हनुमान की अनेक रानियां थी [34], परंतु बाद में हनुमान ने ब्रह्मचारी बनकर घोर तपस्या की और मोक्ष पद को प्राप्त किया।

निष्कर्ष

इस प्रकार आदिकवि वाल्मीकि और जैनाचार्यों की दृष्टि में हनुमान चरित के सन्दर्भ में अनेक विषमताऐं दृष्टिगोचर होती हैं, परन्तु इसके पश्चात भी दोनों ही परम्पराओं में वर्णित रामकथाओं में हनुमान की अनुपस्थिति में रामकथाऐं अधुरी ही रह जाती है। हनुमान के बिना रामकथा की कल्पना भी नहीं की जा सकती। रामकथा के हनुमान धुरी के समान है जिनके बिना रामकथा अपूर्ण ही रहती है। इस प्रकार हनुमान ने अपनी वीरता और भक्ति के द्वारा श्रीराम के हृदय में ही नहीं अपितु संपूर्ण जगत के जनमानस के हृदय में अपना विशिष्ट स्थान बना लिया है।

सन्दर्भ

[1]. चतुर्वेदी द्वारकाप्रसाद शर्मा (अनु.), श्रीमद्वाल्मीकि रामायण, किष्किन्धाकाण्ड सर्ग-3, श्लोक 25-35,

रामनारायण लाल पब्लिशर और बुकसेलर, इलाहाबाद, सन् 1927

[2]. वाल्मीकि रामायण, बालकाण्ड 17/1-6, गीताप्रेस गोरखपुर, संवत 2072

[3]. वाल्मीकि रामायण, बालकाण्ड 17/16, गीताप्रेस गोरखपुर, संवत 2072

[4]. डॉ. राय गोविन्द चन्द्र, हनुमान के देवत्व तथा मूर्ति का विकास, हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, 2004, पृ. 271.

[5]. डॉ. रामंनद शुक्ल, रामायण तथा पौराणिक साहित्य में हनुमान, सुलभ प्रकाशन, लखनऊ, 1996, पृ. 25.

[6]. पं. अशोक कुमार गौड, हनुमद् रहस्यम, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, 2013, पृ. 353.

[7]. जगद्गुरु रामभद्राचार्य, गीतरामायणम्, बालकाण्डम् सर्ग-2 गीतराघवाविर्भावो नाम, गीत-4, जगद्गुरु रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश, 2011

[8]. आनन्द रामायण, सारकाण्ड- 13/162-163, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, वाराणसी, 2016.

[9]. डॉ. रामंनद शुक्ल, रामायण तथा पौराणिक साहित्य में हनुमान, सुलभ प्रकाशन, लखनऊ, 1996, पृ. 25

[10]. वाल्मीकि रामायण, उत्तरकाण्ड 35/42, 46, 47, गीताप्रेस गोरखपुर, संवत 2072

[11]. वाल्मीकि रामायण, उत्तरकाण्ड 36/11, गीताप्रेस गोरखपुर, संवत 2072

[12]. वाल्मीकि रामायण, युद्धकाण्ड 28/12-15, गीताप्रेस गोरखपुर, संवत 2072

[13]. वाल्मीकि रामायण, किष्किन्धाकाण्ड 66/29-30, गीताप्रेस गोरखपुर, संवत 2072

[14]. वाल्मीकि रामायण, युद्धकाण्ड 28/10, गीताप्रेस गोरखपुर, संवत 2072

[15]. वाल्मीकि रामायण, उत्तरकाण्ड 36/44-47, गीताप्रेस गोरखपुर, संवत 2072

[16]. श्रीपाराशर संहिता, 6/77, जय बजरंग चेरिटेबल ट्रस्ट, लखनऊ, सन् 2008

[17]. डॉ. सुरेन्द्र कुमार जैन, पउमचरियं का साहित्यिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन, जैनविश्व भारती प्रकाशन, लाडनूं (नागोर), 2001, पृ. 2.

[18]. डॉ. सुदर्शनलाल जैन, जैन साहित्य में श्रीहनुमान् (शोधपत्र), संस्कृत वाङ्मय मे श्रीहनुमान, राजस्थान संस्कृत अकादमी, जयपुर, सन् 1996, पृ. 141,

[19]. डॉ. एच. जैकोबी (संपा.), पउमचरियं, भाग-1, 17/48-59, प्राकृत ग्रन्थ परिषद्, वाराणसी, संवत 2018,

[20]. पद्मपुराण, आचार्य रविषेण, भाग-1, 15/6-8, सम्पा. डॉ. पन्नालाल जैन, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, सन् 1994,

[21]. पन्नालाल जैन साहित्याचार्य (संपा.), पद्म पुराण - आचार्य रविषेण, भारतीय ज्ञानपीठ, वाराणसी, 1994, भाग-1, 17/307, 364.

[22]. पन्नालाल जैन साहित्याचार्य (संपा.), पद्म पुराण - आचार्य रविषेण, भारतीय ज्ञानपीठ, वाराणसी, 1994, भाग-1, 3/202-208.

[23]. श्रीहनुमान-अंक, कल्याण पत्रिका, पृ. 363, गीताप्रेस गोरखपुर, संवत 2068,

[24]. डॉ. एच. सी. भायाणी (संपा.), पउमचरिउ, महाकवि स्वयंभू, भाग-1, संधि-19, 9/5-7, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, सन् 1975

[25]. डॉ. एच. जैकोबी (संपा.), पउमचरियं-भाग 1, 17/114, प्राकृत ग्रन्थ परिषद्, वाराणसी, संवत 2018

[26]. डॉ. एच. जैकोबी (संपा.), आचार्य विमलसूरि - पउमचरियं, प्राकृत ग्रन्थ परिषद्, वाराणसी, संवत 2018, भाग-1, 17/120.

[27]. डॉ. एच. जैकोबी (संपा.), आचार्य विमलसूरि - पउमचरियं, प्राकृत ग्रन्थ परिषद्, वाराणसी, संवत 2018, भाग-1, 17/121.

[28]. डॉ. एच. सी. भायाणी (संपा.), पउमचरिउ, महाकवि स्वयंभू, भाग-1, संधि-19, 11/8, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, सन् 1975

[29]. डॉ. एच. सी. भायाणी (संपा.), पउमचरिउ, महाकवि स्वयंभू, भाग-1, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, सन् 1975, पृ. 317.

[30]. डॉ. सुदर्शनलाल जैन, जैन साहित्य में श्रीहनुमान् (शोधपत्र),

संस्कृत वाङ्मय मे श्रीहनुमान, राजस्थान संस्कृत अकादमी, जयपुर, सन् 1996, पृ. 144.

[31]. पन्नालाल जैन साहित्याचार्य (संपा.), पद्म पुराण - आचार्य रविषेण, भारतीय ज्ञानपीठ, वाराणसी, 1994.भाग-1, 19/101, 102.

[32]. पन्नालाल जैन साहित्याचार्य (संपा.), पद्म पुराण - आचार्य रविषेण, भारतीय ज्ञानपीठ, वाराणसी, 1994.भाग-1, 19/104.

[33]. पन्नालाल जैन साहित्याचार्य (संपा.), पद्म पुराण - आचार्य रविषेण, भारतीय ज्ञानपीठ, वाराणसी, 1994.भाग-1, 19/105.

[34]. पन्नालाल जैन साहित्याचार्य (संपा.), पद्म पुराण - आचार्य रविषेण, भारतीय ज्ञानपीठ, वाराणसी, 1994.भाग-1, सर्ग 19.